

1. तपः, विवेकः, शिवः, साधनं आदि उक्त
 वेदां मूल्यं इति एतत्तु विदितं है किन्तु
 साधन-मूल्यं उक्तं जातं है। इन विचारों
 के अनुसार मानित वस्तुओं के विपरीत सात,
 जन्म, जन्म, तथा पलायन आदि मानविक
 अवस्थाओं की-अपने वस्तु-के साधन के रूप
 में सुख के साथ अपने आप में सुख अपने
 स्वतः जाय सुख होता है। मानविक अवस्था-
 एवम् अपने परिणाम के साथ सुख नहीं
 माना जाय है किन्तु निरूप अपने ही हीन देश-उक्त
 तथा परिणामपरिणाम होता है सात उत्तरः
 सुख होता है। (इन्हीं अनुसार जन्म मूल्य
 मनुष्य की जिन मानविक अवस्थाओं के उत्तर
 होता है उत्तरा सुख के उत्तर देता उत्तर
 परिणामिका, यह विचार नहीं होता किन्तु
 केवल के लिए अपने एवं स्वयं सुख तथा
 वांछनीय होता है।)

अथ

मनुष्य की हीन की मानविक

अवस्थाओं अपने आप में सुख एवं वांछनी-
 यों है। इन अवस्था में सुख के पलायन
 अवस्था आदि आदि अवस्था की दार्शनिक सात
 अवस्था निम्न हो ही। स्वतः जाय सुख मानव
 है। इन्हीं विपरीत वेचन मिलता किन्तु
 आदि दार्शनिकों ने अपने अपने आप आनंद को
 ही अपने आप में सुख तथा वांछनीय माना
 है। किन्तु केवल इन सुखवादी दार्शनिकों के

very much, poor, but still get
very much stuff every day. E. B. B.

4164-4047' 58 54 58 51 25 10-40 25

3. 37/61/11 ਮਾਨਿਓ 9 (ਦੁਆ) ਤੇ ਵਿਪਰੀਤ ਰਾਸ਼ੀ,

१०५ सामान्यतया जलमय द्रव्य मार्ग

99627 147 3104 965 6149 3104

॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

૧૯૮૬: જાણ્યું મુનું દોનું ૬/૫ મહાભારત
 દેખાઈ મુનું મહાભારત મુનું મહાભારત

માર્ગે જાતી દેવલિટ નિવૃત્તિ અર્થે વહીવટી પદ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

५५. एतत् ६ (२०६) अथवा १ (२०६) ॥

Handwritten text: Handwritten text: 11/11/15 - 11/11/15

[illegible][illegible]

quinta, cluſ. 5.)

मनुष्य-ही ही मागलित

अवधि-१५ दिनों में प्रमाणित करने के लिए

नीचे दिए गए चित्र में सुझाव दीजिए कि

அருள் ஆடி அடிவாழ்ந் தாய்ந்து வாழ
வாழ்வாழ்ந் தாய்ந்து வாழ்வாழ்ந் தாய்ந்து வாழ

५३३ विपरीत वेधम मिलनपा विपरीत.

આદિ દારૂનિર્મીતે રૂપાણી અપના આગંદો

॥ आपने आप में सुख तथा नाचने का मन्त्र

[illegible]